शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 62/D   अप्रैल-जून 2023   400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम
डॉ॰ प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार
09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

परामर्श-मंडल

डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा, 101, Guymon Court, MorrisVille, NC-27560 USA
डॉ॰ सुरेशचंद्र शुक्ल, अध्यक्ष इंडो-नार्वेजियन सूचना एवं सांस्कृतिक मंच
प्रो॰ हरिमोहन, कुलपति, जे॰एस॰ विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) उ॰प्र॰
प्रो॰ खेमसिंह डहेरिया, कुलपति, अटलबिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म॰प्र॰) 462038
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका, ए-98, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली 110052
प्रो॰ अशोक चक्रधर, जे-116, सरिता विहार, नई दिल्ली
श्री अनिल शर्मा जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ पूरनचंद टंडन, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ॰ एस॰के॰ पवार, प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ 580003 (कर्नाटक)
प्रो॰ नंदकिशोर पांडेय, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया, पूर्व आचार्य हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा
प्रो॰ बाबूराम, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, चौ॰ बंशीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)
डॉ॰ राजेंद्र मिश्र, 14/4 स्नेहलता गंज, इंदौर 452003 (म॰प्र॰)
प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
प्रो॰ आनंदप्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ॰ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
प्रो॰ अर्जुन चव्हाण, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महा॰)
डॉ॰ माया टाक, पूर्व प्रोफ़ेसर संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ अनिलकुमार जैन, पूर्व प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ डॉ॰ सदानंद भौसले, अध्यक्ष हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महा॰)
प्रो॰ शंभुनाथ तिवारी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)
डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', (पूर्व प्राचार्य) 74/3 नया नेहरूनगर, रुड़की (उत्तराखंड)
डॉ॰ अवनिजेश अवस्थी, हिंदी विभाग, पी॰जी॰ डी॰ए॰वी॰ कालेज, नेहरू नगर, नई दिल्ली
डॉ॰ अरुणकुमार भगत, अध्यक्ष, मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी
प्रो॰ मंजुला राणा, अध्यक्ष हिंदी विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर
प्रो॰ हनुमानप्रसाद शुक्ल, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
प्रो॰ चंद्रकांत मिसाल, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विद्यापीठ, पुणे (महा॰)
डॉ॰ मुकेश गर्ग, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रो॰ जितेंद्र वत्स, प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार)
डॉ॰ माला मिश्रा, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, अदिति कालेज (दिल्ली विश्व॰), बवाना
डॉ॰ दिनेशकुमार चौबे, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)
डॉ॰ शहाबुद्दीन शेख़, प्राचार्य, लोकसेवा कला व विज्ञान महा॰, औरंगाबाद (महा॰)
डॉ॰ महेशचंद्र, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ॰प्र॰)
श्री राकेशकुमार दुबे, पत्रकारिता और जनसंचार विभाग, उड़ीसा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट (उड़ीसा)
डॉ॰ महेश दिवाकर, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं कला मंच, मुरादाबाद (उ॰प्र॰)
डॉ॰ प्रणव शर्मा, अध्यक्ष हिंदी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत 262001 उ॰प्र॰
डॉ॰ राखी उपाध्याय, प्रोफेसर हिंदी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, देहरादून 248001 (उत्तराखंड)

अनुक्रम

सामवेदे उपासनीय तत्वानां वैशिष्ट्यम्/
भास्कर राव पांढरे, आचार्य डॉ॰ रामकिशोर मिश्र 19

उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं निजीकरण/
संजीव कुमार, डॉ॰ आदित्य नारायण चौधरी 23

अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक विकास में
सरकारी योजना की भूमिका : एक अध्ययन/ **शंभु राम, डॉ॰ परमानंद प्रभाकर** 26

योगासनों के अभ्यास द्वारा महिलाओं की शारीरिक समस्याओं में लाभ का अध्ययन/
अपर्णा शर्मा, डॉ॰ विजेन्द्र कपरूवाण 30

छत्तीसगढ़ में समाज कल्याण के क्षेत्र में गोविंदपुर आश्रम का योगदान/
गुलजार सिंह ठाकुर, डॉ॰ घनश्याम दुबे 36

कौशल पवार की कहानियों में दलित नारी चेतना/ **लक्ष्मी देवी** 41

स्त्री संघर्ष संदर्भ 'शिकंजे का दर्द'/ **शिवाली शर्मा** 46

विद्यालयों में विभिन्न खेल प्रतियोगिता में प्रतिभागिता तथा समावेशन/ **पूजा शर्मा** 51

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन का
मनोवैज्ञानिक अध्ययन/ **डॉ॰ सीता, डॉ॰ भावना डोभाल** 57

दिव्यांगजनों के लिए रेडियो की भूमिका : दृष्टि बाधार्थ के संदर्भ में/
डॉ॰ सुप्रिया रतुड़ी, कल्पना पंकज 63

उत्तराखंड में महिला स्वास्थ्य की स्थिति चंपावत जिले के विशेष संदर्भ में/
गणेश गिरी 68

मीरा की भक्ति भावना/ **डॉ॰ गीता पोस्ते** 71

मुक्तिबोध की रचना-प्रक्रिया से गुजरते हुए/ **रामलखन पाल** 75

ललितक पृथ्वीपुत्र : एक समीक्षा/ **डॉ॰ उमा शंकर दिक्षित** 81

बैराठ में बौद्धावशेष : एक ऐतिहासिक अध्ययन/
डॉ॰ अनिला पुरोहित, दीपक कुमार यादव 86

सूरजपाल चौहान कृत तिरस्कृत आत्मकथा में अभिव्यक्त दलित संघर्ष/
डॉ॰ लक्ष्मण भोसले 90

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथासाहित्य में अंतर्द्वंद्व/ **डॉ॰ कुमारी पूनम चौहान** 96

Social Media and Politics/ **Dr. SwarnSuman** 99

Relationship Between Self Concept, Anxiety, and Sports Achievement
Motivation With Kabaddi Performance of Alwar Distrit Players/
Dr. Ganga Shyam Gurjar, Rampat Meena 106

Scope for Preventive Interventions in India's Healthcare System:
A Holistic Approach/**Jyoti Rani** 113

Different Aspects of Slavery in India During Sultanate Period/
Dr. Sundeep Kumar 118
Exploring Cultural Perspectives of Vocational Education and IT'S
Influence on Sustainable Entrepreneurship Development/ **Nidhi Jain** 125
The British Raj and its dark shadow over Indian culture, arts, and heritage/
Richa Jain, Dr. Bhawna Grover 134
औद्योगिक क्षेत्र में महिला श्रमिकों की सामूहिक सौदेबाजी, श्रम कानूनों में संशोधन तथा
श्रमिकों के लिए कल्याणकारी राज्य की भूमिकाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन
सुरेन्द्र, डॉ॰ कल्पनाथ सिंह यादव 139
ग्रामीण महिलाओं पर जनसंचार माध्यमों के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का
समाजशास्त्रीय अध्ययन/ **मौ॰ उस्मान, डॉ॰ कल्पनाथ सिंह यादव** 144
अनुसूचित जाति की महिलाओं में परिवर्तन लाने में सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों,
कल्याणकारी नीतियों व कार्यक्रमों के प्रयासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन/
हनी कुमार, डॉ॰ मीना शर्मा 151
दलित साहित्यिक पत्रिकाएँ और सहगामी विमर्श/ **सत्येन्द्र कुमार** 157
लोकमान्य तिलक और उनके क्रातिकारी कार्य/ **ममता शंभू यादव** 164
मानसिक स्वास्थ्य में प्राणायाम की उपादेयता/ **डॉ॰ आशीष डोभाल** 170
डॉ॰ मानसिंह दहिया 'आनंद' के काव्य में माया का स्वरूप/
सुरेन्द्र दलाल, डॉ॰ कविता चौधरी 176
डॉ॰ बृजेश सिंह की ग़ज़लों में बिंब विधान/ **डॉ॰ रवींद्र पुंजाराम ठाकरे** 182
'समन्वय' के कवि : गोस्वामी तुलसीदास/ **डॉ॰ सुमित कुमार** 187
ग्रामीण मतदाता, राजनीति व स्वीप गतिविधियाँ/ **डॉ॰ ईश्वरी बृजवासी सूर्यवंशी** 192
नागार्जुन और धूमिल के काव्य में समानताएँ/ **खुशबू जायसवाल** 195
घेरंड मुनि द्वारा बताए गए षट्कर्मों के चिकित्सकीय लाभों का विश्लेषणात्मक अध्ययन/
अंशिका सेन, डॉ॰ कान्ताप्रसाद पोखरियाल 199
महर्षि घेरंड द्वारा प्रतिपादित घटस्थ योग का शारीरिक शुद्धि हेतु प्रयोजन/
डॉ॰ अरविन्द वैदवान, गुन्जा भार्गव 205
'कृष्णगीतावली' में अभिव्यक्त तुलसी की मानवतावादी दृष्टि/ **डॉ॰ सुमित कुमार** 209
श्रीअरविंद और परमहंस योगानंद की साधना पद्धतियों की समानताओं और
भिन्नताओं का समीक्षात्मक अध्ययन/ **शुभम, डॉ॰ ममता शर्मा** 216
गिरीश पंकज के साहित्य में उत्तराधुनिक विमर्श/ **डॉ॰ संध्या** 222
'नदी-रंग जैसी लड़की' उपन्यास में अभिव्यक्त नदियों की दशा और दिशा/
डॉ॰ शिवशंकर यादव, अरविन्द कुमार यादव 228
सद्धर्मपुंडरीक सूत्र : एक साहित्यिक अध्ययन/ **डॉ॰ उपेंद्र कुमार** 233
प्रेमचंद पूर्व युग से लेकर आज तक हिंदी कहानी का भाषा-शिल्प :
एक समग्र विश्लेषण/ **अनिरुद्ध कुमार** 238
गिरिराजशरण अग्रवाल के व्यंग्यों में चित्रित लोकतंत्र और चुनावी राजनीति/
विशाल कुमार, डॉ॰ माया मलिक 244

पाल काल में बौद्धकालीन शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययन/
डॉ॰ विजय कुमार तिवारी, डॉ॰ उपेंद्र कुमार 249
प्रवासी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में आर्थिक विवेचन/ **स्वाति** 255
सुधा वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना/
श्रीमती सुधा चंद्राकर, डॉ॰ बलजीत कौर, डॉ॰ देशबंधु तिवारी 260
डॉ॰ मानसिंह दहिया 'आनंद' के काव्य में पर्यावरणीय चेतना/
सुरेन्द्र दलाल, डॉ॰ कविता चौधरी 263
आदिवासी स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व का प्रश्न : बेघर सपने/ **प्रमिला दत्तु पारधी** 269
भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में पुराणों के बहुआयामी महत्त्व का अध्ययन/
पवन कुमार 275
अशोक के अभिलेखों में वर्णित सुशासन की वर्तमान में प्रासंगिकता/**अंकितकुमार सिंह** 282
'Visuality' & 'Plurality of Perceptions' in Female Colonial Gaze from
Early Twentieth Century/ **Lalit Kumar** 287
Between Two Worlds : The Village and the City in
Vasily Shukshin's Works/ **Dr. Rohit Raj** 295
Evaluating the Educational Effects of Television Programs on
Children in Patna/**Shubham Kumar Sah, Aditya Kumar, Shubham Kumari** 301
The Methods and Stages of the Preservation of
Buddhist Canonical Literature: From Oral Tradition to Written Records/
Dr. Vijay Kumar Tiwary 310
Mapping the Problems of Tribal Girl's Education and Reviewing
Reviewing the Success of the KGBV Scheme/
Manash Kumar, Dr. Madhu Kushwaha 319
स्वदेशी आंदोलन में उग्र राष्ट्रवादियों की भूमिका/
अंशु जायसवाल, डॉ॰ राकेश रंजन सिन्हा 329
हरियाणवी लोकगीतों में नारी चित्रण के विविध रूप/ **सुमन देवी, डॉ॰ अनिशा** 332

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ॰ सीता (सहायक प्राध्यापक)
मनोविज्ञान विभाग, समाज विज्ञान विद्याशाखा
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
डॉ॰ भावना डोभाल (सहायक प्राध्यापक)
समाजशास्त्र विभाग, समाज विज्ञान विद्याशाखा
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

विवाह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो पुरुषों और महिलाओं को पारिवारिक जीवन जीने की अनुमति देती है। यह प्रजनन (संतान के जन्म) से अधिक कार्य से परे नर और मादा के बीच कमोबेश टिकाऊ स्थिति है। विवाह के द्वारा वे बुनियादी पारिवारिक जीवन शुरू करते हैं। विवाह के गुणों में यौन जीवन का विनियमन, यौन-संबंध, परिवार की स्थापना की ओर ले जाना, आर्थिक निगम प्रदान करना, साथी की भावनात्मक और बौद्धिक अंतर-उत्तेजना में योगदान देना और सामाजिक एकजुटता का लक्ष्य शामिल है। विवाह संस्था का अलग-अलग संस्कृति में अलग-अलग प्रभाव हो सकता है। इसका उद्देश्य, कार्य और रूप अलग-अलग समाज में अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन यह एक संस्था के रूप में हर जगह मौजूद है। विवाह को पुरुष और महिला के बीच अधिक या कम टिकाऊ संबंध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो केवल प्रजनन के कार्य से परे संतान के जन्म के बाद तक चलता है।

वैवाहिक संतुष्टि खुशी की एक व्यक्तिपरक भावना है और विवाह के सभी मौजूदा पहलुओं पर विचार करते समय पति या पत्नी द्वारा अनुभव किया गया आनंद है। विभिन्न संस्कृतियों में विवाह को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्वीकार किया गया है। इसलिए इससे संबंधित पाश्चात्य देशों में किए गए अध्ययनों के निष्कर्ष को भारतीय संस्कृति के विवाह-संबंधी अध्ययन में लागू नहीं किया जा सकता। क्योंकि भारतीय संस्कृति में विवाह का अर्थ और स्वरूप भिन्न प्रकार का है। भारतीय संस्कृति में विवाह को जन्म के साथ निर्धारित मानते हैं और इस जीवनपर्यंत का गठन मानते हैं तथा विवाह को कोई समझौता या अल्पकालिक संबंध नहीं मानते हैं हिंदू दर्शन के अनुसार विवाह एक संस्कार है और इसलिए यह पवित्र और धार्मिक बंधन है।

भारतीय शादियाँ पूरी तरह से परंपरा, रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के बारे में हैं। दुनियाभर की शादियों की तुलना में, भारतीय शादियाँ विस्तृत रूप से आयोजित होती हैं। भारत में, शादियाँ न केवल दूल्हा और दुल्हन के बारे में होती हैं, बल्कि उनके परिवारों के मिलन के बारे में भी होती हैं। वास्तव में, परंपरागत रूप से, भारत में विवाह परिवार के सदस्यों द्वारा तय किए जाते हैं। हालाँकि, समय के साथ, व्यक्तियों के विवाह करने के तरीके में काफी बदलाव आया है। भारतीय विवाहों के प्रकारों में अरेंज्ड मैरिज, लव मैरिज, अरेंज्ड-लव मैरिज, लव-अरेंज्ड मैरिज, अंतरजातीय

विवाह, कोर्ट मैरिज शामिल हैं। व्यवस्थित विवाह भारतीय विवाहों के सबसे पुराने और पारंपरिक प्रकारों में से एक है। इस प्रकार से, आमतौर पर परिवार विवाह की व्यवस्था करते हैं।

व्यवस्थित विवाह के विपरीत, प्रेम विवाह वह होता है जहाँ जोड़ा पहले प्यार में पड़ता है और फिर शादी का चुनाव करता है।

मोनोगैमी, बहुविवाह और बहुपतित्व दुनियाभर में उपयोग किए जाने वाले कुछ विवाह अनुबंध हैं। किसी समाज में पारंपरिक रूप से भौगोलिक स्थिति, समाज की धार्मिक संरचना, पुरुषों और महिलाओं की उपलब्धता और समाज की आर्थिक स्थिति के आधार पर विवाह की अनुमति दी जाती है।

विवाह के प्रति दृष्टिकोण में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा है विवाह का धार्मिक पक्ष धीरे-धीरे कमजोर पड़ता जा रहा है और अधिक अधिक संख्या में लोग उसे धार्मिक संस्कारों के बजाय सामाजिक अनुबंध के रूप में स्वीकार करते जा रहे हैं। आज अधिकांश स्त्रियाँ मानने लगी हैं कि सुख संतोष के लिए उन्हें किसी दूसरी चीजों की भी आवश्यकता होती है। आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, पाश्चात्यातीकरण और शिक्षा पर बल, नारी की उत्थान के लिए समानता के नारे इत्यादि ने स्त्रियों को प्रभावित किया है। इसके साथ ही और भी अनेक कारण हैं जिनका विवाहित दंपति पर प्रभाव पड़ा है तथा विवाह को मात्र जन्म-जन्मांतर का मिलन ना मानकर केवल एक कॉन्ट्रैक्ट के रूप में मान रहे हैं। जिसको कभी भी प्रारंभिक किया जा सकता है तथा कभी भी तोड़ा जा सकता है। यौन सद्‌भाव और आपसी आनंद सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों में से है जो वैवाहिक समायोजन को सफलता तक पहुँचाते हैं। गोल, एस॰ एवं नारंग, डी॰के॰ (2012) के अनुसार विवाह सुख, खुशी, शांति, संतुष्टि, दूसरों के साथ मेल-जोल, सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करना और व्यक्तित्व को निखारना है। विवाह-संबंध नाजुक, सदैव परिवर्तनशील और मिश्रित होता है।

साहित्य की समीक्षा

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत आंतरिक मनोवैज्ञानिक आवेगों और पर्यावरण की ताकतों और माँगों के बीच संतुलन प्रभावित होता है। इस प्रकार, अक्सर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि समायोजन एक सतत प्रक्रिया हो सकती है, जो व्यक्तियों के संतोषजनक और पूर्ण जीवन को बनाती है। यह उन्हें संतुष्ट करने के लिए जरूरतों और कौशल के बीच एक संतुलन कार्य के अलावा और कुछ नहीं है। इस प्रकार, कोई कह सकता है कि समायोजन व्यक्ति को जीवन में भविष्य की माँगों के लिए सशक्त बनाने, मजबूत करने और सक्षम करने का एक तरीका हो सकता है। (जोस जे॰, 2010)

लेहरर (2006) ने विवाह की आयु और वैवाहिक अस्थिरता पर एक अध्ययन किया। परिकल्पना में कहा गया कि कम उम्र में शादी के असफल होने और टूटने का खतरा अधिक होता है। अब तक यह सुझाव दिया गया है कि परिपक्व उम्र प्राप्त करने के बाद, विवाह की उम्र और वैवाहिक अस्थिरता के बीच संबंध सकारात्मक हो सकता है, इसका कारण यह है कि जैसे-जैसे अविवाहित महिलाएँ मानसिक और शारीरिक रूप से परिपक्व होती हैं, वे अपने साथी को यथार्थवादी और बेहतर तरीके से चुन सकती हैं। परिणाम ने संकेत दिया कि विवाह की उम्र और वैवाहिक अस्थिरता के बीच का संबंध बीस के दशक के अंत तक दृढ़ता से नकारात्मक था, और इस उम्र के बाद वक्र कम हो जाता है।

नाथावत और माथुर, (2003) ने अपने अध्ययन के परिणाम में यह बताया कि वैवाहिक

समायोजन के संबंध में कामकाजी महिलाओं ने गृहिणियों की तुलना में वैवाहिक समायोजन और विशेष कल्याण को सार्थक रूप से बेहतर ढंग से व्यक्त किया है।

साहू और सिंह (2014) ने कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं के भावनात्मक परिपक्वता स्तर और आत्मसम्मान स्तर के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर पाया। हालाँकि, दानी, एस॰, और सिंघई, एम॰ (2018) ने गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना की कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं के बीच कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है। हालाँकि, कामकाजी महिलाएँ गैर-कामकाजी महिलाओं की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं।

शर्मा, आर॰ए॰ (2019) ने पाया कि कामकाजी महिलाएँ गैर-कामकाजी महिलाओं की तुलना में अधिक प्राकृतिक, स्वतंत्र और स्वस्थ थीं, जबकि गैर-कामकाजी महिलाएँ कामकाजी महिलाओं की तुलना में अधिक जुनूनी, निर्भर होती हैं।

जूही कुमारी एवं विजयालक्ष्मी (2021) ने अपने अध्ययनों में विवाहित कामकाजी महिलाएँ एवं विवाहित गैर-कामकाजी महिलाओं में समायोजन के स्तर में महत्त्वपूर्ण अंतर पाया।

शोध के उद्देश्य

* महिलाओं के वैवाहिक समायोजन का अध्ययन करना।

* कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं में वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

* कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन के बीच अंतर ज्ञात करना।

* वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों में कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के मध्य अंतर ज्ञात करना।

उपकल्पना : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य निम्नलिखित शोध-परिकल्पनाओं की जाँच करना था।

* कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

* वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों में कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का परिसीमन

* प्रस्तुत अध्ययन सिर्फ देहरादून जिले की महिलाओं पर किया गया पर किया गया है।

* प्रस्तुत अध्ययन में 25 से 40 आयु वर्ग की महिलाओं को ही सम्मिलित किया गया।

* समान आय वर्ग (50,000 से 70,000) की कामकाजी महिलाओं को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

शोध कार्यविधि

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन : प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखंड राज्य के देहरादून जिले के रायपुर विकासखंड की विवाहित 25 से 40 वर्ष की 32 कामकाजी तथा 32 गैर कामकाजी महिलाओं को प्रतिदर्श के रूप में शामिल किया गया। प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। जिसमें भारतीय परिवहन निगम एवं भारतीय खाद्य निगम में कार्यरत महिलाओं को कामकाजी

महिलाओं के रूप में अध्ययन में शामिल किया गया। गैर कामकाजी महिलाओं में गृहणी वर्ग को शामिल किया गया। 50,000 से 70,000 आय वर्ग की महिलाओं को ही अध्ययन में शामिल किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ: प्रस्तुत शोध में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-टेस्ट का उपयोग किया गया।

शोध हेतु प्रयुक्त उपकरण

व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र: प्रयोज्यों की व्यक्तिगत सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए एक व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का निर्माण किया जिसमें प्रयोज्य के यौन, आयु, धर्म, विद्यालय, शैक्षिक स्तर, मासिक आय, परिवार की स्थिति आदि से संबंधित व्यक्तिगत सूचनाएँ थीं।

वैवाहिक समायोजन मापनी (MaritalAdjustment Scale)**:** प्रस्तुत शोध में डॉ॰ गायत्री तिवारी, जसवंत डोरा तथा स्नेहा जैन द्वारा विकसित मैरिटल एडजेस्टमेंट मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में 5 वैकल्पिक उत्तरों वाले 90 पद हैं जिसमें 3 आयाम हैं- शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक व संवेगात्मक। यह पाँच बिंदु मापनी है जिसमें अत्यधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, अत्यधिक असहमत कथनों में सकारात्मक कथनों के लिए क्रमश 5,4,3,2,1 प्राप्तांक प्रदान दिए जाते हैं तथा नकारात्मक कथनों के लिए क्रमश 1,2,3,4,5, प्राप्तांक प्रदान किए जाते हैं। किसी दिए गए क्षेत्र में उच्च स्कोर समायोजन के उच्च स्तर को दर्शाते हैं। मापनी की विषयगत तकनीकी वैधता रेटिंग 7.2 तथा विश्वसनीयता गुणांक .78 है।

परिणाम एवं विश्लेषण : शोध के परिणामों से स्पष्ट है कि दोनों समूहों में वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों में महत्त्वपूर्ण सार्थक अंतर है।

उपकल्पना-1 प्रस्तुत अध्ययन में पहली उपकल्पना यह निर्मित की गई थी कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। उपकल्पना की जाँच करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए-

तालिका-1

	कामकाजी महिलाएँ		**गैर कामकाजी महिलाएँ**		**t. का मान**	**स्वतंत्रता के अंश (df)**	**सार्थकता का स्तर**
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**			
वैवाहिक समायोजन मापनी	301.19	12.608	279.468	9.168	7.881	62	0.05

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि वैवाहिक समायोजन मापनी पर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान 301.19 जो कि गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान (279.468) से अधिक है। प्राप्त t का मान (7.881) 0.05 सार्थकता का स्तर पर t के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् दोनों समूहों के मध्य वैवाहिक समायोजन पर सार्थक अंतर है। अर्थात् उपकल्पना एक निरर्थक सिद्ध हुई। विजयलक्ष्मी और कर्नाटक यू (2000) के अध्ययन उपर्युक्त परिणाम का समर्थन करते हैं। उन्होंने कामकाजी महिलाओं और गृहिणियों के वैवाहिक समायोजन की जाँच की, उनके वैवाहिक समायोजन में कामकाजी महिलाओं और गृहिणियों के बीच अंतर के महत्त्व की सूचना दी। उन्होंने बताया कि कामकाजी महिलाओं में गृहिणियों की तुलना में काफी अधिक वैवाहिक समायोजन

 ISSN 0975-735X

होता है। डेव (2015) के एक अध्ययन में देखे गए इसी तरह के निष्कर्षों से पता चला है कि कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं के बीच वैवाहिक समायोजन में महत्त्वपूर्ण अंतर है।

प्रस्तुत अध्ययन में दूसरी उपकल्पना यह निर्मित की गई थी कि वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों में कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। उपकल्पना की जाँच करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए–

तालिका-2

वैवाहिक समायोजन के विविध आयाम	**कामकाजी महिलाएँ**		**गैर कामकाजी महिलाएँ**		**t. का मान**	**स्वतंत्रता के अंश (df)**	**सार्थकता का स्तर**
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**			
शारीरिक	69.093	4.296	65.312	7.527	3.120	62	0.05
आर्थिक एवं सामाजिक	105.95	2.529	99.593	5.395	17.386		
मनोवैज्ञानिक व संवेगात्मक	122.656	9.508	114.562	6.436	3.987		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वैवाहिक समायोजन मापनी के शारीरिक आयाम में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान 69.093, प्रामाणिक विचलन 4.296 हैं। वहीं गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान 65.312, प्रामाणिक विचलन 7.527 है। प्राप्त टी का मान 3.120 है जो 0. 05 सार्थकता स्तर पर टी के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् दोनों समूहों के मध्य वैवाहिक समायोजन के शारीरिक आयाम पर सार्थक अंतर है।

वैवाहिक समायोजन मापनी के आर्थिक एवं सामाजिक आयाम में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान 105.95, प्रामाणिक विचलन 2.529 हैं वहीं गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मध्यमान 99.593 ,प्रामाणिक विचलन 5.395 है। प्राप्त टी का मान 17.386 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर टी के मान से बहुत अधिक है। अर्थात दोनों समूहों के मध्य वैवाहिक समायोजन के आर्थिक एवं सामाजिक आयाम पर महत्त्वपूर्ण सार्थक अंतर है।

वैवाहिक समायोजन मापनी के मनोवैज्ञानिक व संवेगात्मक आयाम में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान 122.656, प्रामाणिक विचलन 9.508 है वहीं गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मध्यमान 114.562,प्रामाणिक विचलन 6.436 है। प्राप्त टी का मान 3.987 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर टी के मान से अधिक है। अर्थात दोनों समूहों के मध्य वैवाहिक समायोजन के आर्थिक एवं सामाजिक आयाम पर महत्त्वपूर्ण सार्थक अंतर है।

उपर्युक्त परिणाम दर्शाते हैं कि वैवाहिक समायोजन के विभिन्न आयामों में कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के मध्य सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण अंतर है। अत: उपकल्पना दो निरर्थक सिद्ध हुई। साहू और सिंह (2014), शर्मा, आर॰ए॰ (2019) के अध्ययन उपर्युक्त परिणामों की पुष्टि करते हैं। नीरज, डी॰, संधू, डी॰, और वर्मा, के॰ (2021) द्वारा किए गए अध्ययन में बताए गए इसी तरह के निष्कर्षों से पता चला है कि कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं की मनोसामाजिक समायोजन, आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि में महत्त्वपूर्ण अंतर है।

निष्कर्ष : वर्तमान अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया है कि कामकाजी महिलाओं के बीच

वैवाहिक समायोजन और समग्र समायोजन पर नियोक्तायता एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अध्ययन में दावा किया गया है कि रोजगार में विवाहित कामकाजी महिला के समायोजन को प्रभावित करने की जबरदस्त क्षमता है। इस अध्ययन से प्राप्त परिणाम और अवलोकन कामकाजी और गैर–कामकाजी विवाहित महिलाओं में समायोजन की समझ विकसित करने में मदद करेंगे।

संदर्भ

1· Dave,A.V. (2015). MaritalAdjustment in workingAnd non-working women. Indian journal of research. Vol. 4; issue 5.

2· Jose, J. (2010). Types ofAdjustment in psychology.

3· Juhi Kumari1, Dr Vijaya Laxmi (2021) International Journal of HumanitiesAnd Social Science Invention (IJHSSI) ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714 www.ijhssi.org ,Volume 10 Issue 11 Ser. I , November, 2021, PP. 30-33

4· Lehrer, J.A., Shrier, L.A., Gortmaker, S., & Buka, S. (2006).Depressive symptoms as Alongitudinal predictor of sexual risk behaviors among US middle and high school students. Pediatrics, 118(1), 189-200.

5· Neeraj, D., Sandhu, D., & Varma, K. (2021). Relationship of psycho socialAdjustment with self-conceptAndAcademicAchievementAmongstAdolescents of workingAnd nonworking women. Elementary Education Online, 20(1), 2720-2724.

6· Rotz, D. (2016). Why have divorce rates fallen: The role of women'sAgeAt marriage.Journal of Human Resources,51(4), 961-1002

7· Sahu, K., & Singh, D. (2014). Mental healthAnd maritalAdjustment of workingAnd non-working married women. International Journal ofAdvancement in EducationAnd Social Sciences, 2(2), 24-28.

8· Sharma, R.A (2019). Study of AdjustmentAt HomeAmong Working WomenAnd Housewives.An International Journal of Management.Vol 8 / No 2 / 13-16

seeta@uou.ac.inbdobhal@uou.ac.in